International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-5 Sep - Oct – 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

हाई स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता का जेंडर व स्थानीयता के आधार पर अध्ययन

नीलम सिंह [1*], डा०सुरक्षा बंसल [2]**
शोधार्थी [1*], एसोसिएट प्रोफेसर [2**]
स्कूल ऑफ एजूकेशन [1,2], शोभित इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्जीनियरिंग एण्ड टैक्नोलॉजी
(डीम्ड–टू–बी यूनिवर्सिटी) एन.एच. 58, मोदीपुरम (मेरठ), इण्डिया।
neelamsingh.edu@gmail.com[1*], drsurakshabansal@gmail.com[2*]**

सारांश–

शिक्षा के द्वारा ही बालक अपने सपने व आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए स्वयं को सबल बनाता है तथा शिक्षा एक विवेकपूर्ण व्यक्ति का निर्माण करती है, जो अपने लक्ष्यों को पूरा करने के काबिल बनता है। परंतु शिक्षा प्राप्त करते हुए शैक्षणिक चिंता से भ्रमित हो जाना एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक समस्या है, जो प्रत्येक वर्ष दुनिया भर के विद्यालय व कॉलेज के लाखों छात्रों को प्रभावित करती है। वर्तमान शोध अध्ययन का उद्देश्य हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता का अध्ययन करना है। शोधार्थी ने न्यादर्श के रूप में मेरठ जिले के 10 हाई स्कूल से 200 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा किया। निष्कर्ष में ज्ञात हुआ, कि लिंग के आधार पर छात्र व छात्राओं में शैक्षणिक चिंता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है तथा शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

कुंजी शब्द– शैक्षणिक चिंता, जेंडर (लिंग), स्थानीयता।

प्रस्तावना–

एक व्यक्ति के विकास की प्रक्रिया में शिक्षा अग्रणी भूमिका निभाती है। **गाँधी जी** के कथानुसार– ''शिक्षा वह है, जो बालक का सर्वांगीण विकास करती है।'' शिक्षा प्राप्त कर बालक स्व–निर्माण तो करता ही है, साथ ही देश के नवनिर्माण में भी अपना योगदान देने की योग्य बन जाता है। बालक को शिक्षित करने की सबसे महत्वपूर्ण व्यवस्था विद्यालय है, जहाँ शिक्षा प्रदान करने के साथ–साथ बालक के व्यवहार को सही आकार देकर व्यक्तित्व का विकास करने का पूर्ण प्रयास किया जाता है। एक बालक जब हाईस्कूल में प्रवेश करता है, तो साथ ही किशोरावस्था में भी प्रवेश करता है। बाल्यावस्था की तुलना में किशोरावस्था में समाज की अपेक्षायें बालक से बढ़ जाती हैं। किशोरावस्था में बालक अति उत्साही होता है। ऊँचे सपने, ऊँची उड़ान जैसी बातें उसके मन में चलती रहती हैं। परंतु समाज की, परिवार की रोक–टोक जैसे उनके पंखों पर शिकंजा कस देती हैं। स्कूल में बढ़ता पाठ्यक्रम, माता–पिता की अपेक्षायें, अध्यापकों के सामने उत्कृष्ट प्रदर्शन, सहपाठियों के बीच अपनी अच्छी छवि बनाने की चेष्टा तथा स्वयं बालक की उत्तम शैक्षणिक उपलब्धि की आकांक्षा बालक को चिंता ग्रस्त बना देती है।

चिंता–

चिंता सभी मानसिक विकारों का प्रमुख कारक है। चिंता को अंग्रेजी में 'Anxiety' कहा जाता है। 'Anxiety' शब्द लेटिन भाषा के 'Anxiedier' शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ है– अनिश्चित आंदोलन तथा धमकियों का मिश्रित अनुभव होना।

'मनोविज्ञान में इस शब्द का परिचय सिग्मंड फ्रायड द्वारा 1894 में कराया गया। चिंता तंत्रिका तंत्र की उत्तेजित स्थिति है, जिसके परिणाम स्वरुप तनाव, घबराहट और बेचैनी की भावनायें उत्पन्न होती हैं।' **(स्पेलबर्गर 1983)**

शैक्षणिक चिंता—

शैक्षणिक चिंता का तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली चिंताओं से है। सामान्य रूप से अधिकांशत: व्यक्ति चिंता से भ्रमित होते हैं। परंतु विद्यार्थियों में सामान्य चिंता की बजाय शैक्षणिक चिंता अधिक पाई जाती है।

'साइकोलॉजी टुडे' के अनुसार— 'शैक्षणिक चिंता तब होती है, जब कोई विद्यार्थी स्कूल के कार्यों से संबंधित तनाव महसूस करता है तथा चिंता के लक्षणों का अनुभव करता है। यह चिंता उसके कार्यों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।'

शैक्षणिक चिंता कई कारणों से उत्पन्न हो सकती है —

- **अपेक्षायें—** माता—पिता, अध्यापकों और समाज के द्वारा की गई अपेक्षाओं पर खरे न उतर पाने का डर एक बालक को चिंता ग्रस्त बनाता है।
- **शैक्षणिक उपलब्धि—** परीक्षा में उत्तम प्रदर्शन न कर पाने का डर, साथ ही पिछले परीक्षा परिणाम में आई कम शैक्षणिक उपलब्धि तथा अधिक अच्छे अंक प्राप्त न हुए तो अगली परीक्षा में भी उत्तम प्राप्तांक प्राप्त करने का दबाव बालक को चिंता से ग्रसित कर देता है।
- **आत्म सम्मान—** जब बालक रोज की कक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाता या कक्षा में डाँट—फटकार पाता है, तो बच्चे के आत्मविश्वास व आत्म सम्मान में कमी आती है। अपने आत्मसम्मान की रक्षा का भरसक प्रयास करने से भी बालक चिंता से ग्रसित हो जाता है।
- **अन्य कारण—** माता—पिता बालक पर उच्च शैक्षणिक उपलब्धि के लिए दबाव बनाते हैं। गृह कार्य में सहयोग न देना, परिवार की पृष्ठभूमि, घर व स्कूल का वातावरण, बालक की संगति, बालक का समायोजन स्तर आदि कई मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक व सांवेगिक कारण बच्चों के चिंता के स्तर को प्रभावित करते हैं।

अध्ययन का औचित्य—

शोध पत्र का विषय शोधार्थी द्वारा इसलिए लिया जा रहा है, क्योंकि आधुनिक युग में वयस्क ही नहीं बल्कि बालक भी चिंता से ग्रसित हैं। जिसमें माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं (जिन्हें हम बढ़ते हुए बच्चे कहते हैं) वे न तो बच्चों में सम्मिलित हो पाते हैं और न ही वयस्कों के साथ ताल—मेल बिठा पाते हैं।

हाईस्कूल में पाठ्यक्रम बढ़ चुका होता है, साथ ही माता—पिता की उम्मीदें भी बच्चों से जुड़ी होती हैं। बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हुए अच्छा प्रदर्शन करने का भरसक प्रयास करते हैं तथा स्वयं की व अपने अभिभावकों तथा अध्यायको की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की लालसा में तनाव में आ जाते हैं तथा चिंताग्रस्त हो जाते हैं। जिसका कुप्रभाव विद्यार्थी को शारीरिक, मानसिक व सामाजिक रूप से पहुँचता है।

शोधार्थी ने मेरठ जिले के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता का अध्ययन करने का प्रयास किया है। जिससे हमें छात्र—छात्राओं की शैक्षणिक चिंता के स्तर में भिन्नता का पता लग सके तथा शहरी क्षेत्र व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की शैक्षणिक चिंता में अन्तर ज्ञात किया जा सके।

अध्ययन की आवश्यकता—

शैक्षणिक चिंता से ग्रसित विद्यार्थी सिर दर्द, उच्च रक्तचाप, शरीर का काँपना, मूर्छित हो जाना, चिड़चिड़ाहट, घबराहट, अनिद्रा, भूख न लगना, पसीने आना, दिमाग का शून्य हो जाना आदि शारीरिक व मानसिक विकारों से ग्रसित हो जाते हैं। जो उनके विकास में बाधा डालते हैं।

इसनेक (2009) के अनुसार— ''शैक्षणिक चिंता और प्रासंगिक विचारों, पूर्वाग्रह, ध्यान और एकाग्रता को कम करने के माध्यम से शैक्षणिक कठिनाइयों की ओर ले जाती है। यदि सही समय पर बालक की शैक्षणिक चिंता पर ध्यान न दिया जाये, तो बालक का विद्यालय में खराब प्रदर्शन, कक्षा में अनुपस्थिति का बढ़ना, शिक्षा को बीच में ही छोड़ देना तथा कक्षा में असफल हो जाना आदि मुख्य प्रभाव परिलक्षित होते हैं।'

हाईस्कूल के विद्यार्थियों में शैक्षणिक चिंता का होना बालक के विकास को अवरूद्ध कर सकता है, अत: शोधार्थी को इस विषय में शोध—अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुई।

समस्या कथन—

हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता का लिंग और स्थानीयता के आधार पर अध्ययन।

शोध में प्रयुक्त प्रत्ययों का परिभाषीकरण—

शोध—अध्ययन के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य समस्या में प्रयुक्त प्रत्ययों को परिभाषित करना है। यह समस्या के मूल और व्यवहारिकता को स्पष्ट करता है।

हाईस्कूल के विद्यार्थी—

शिक्षा संरचना (10+2+3) के अंतर्गत जो विद्यार्थी नौवीं व दसवीं कक्षा में अध्ययनरत होते हैं, उन्हें ही हाईस्कूल के विद्यार्थी कहा जाता है।

शैक्षणिक चिंता—

शैक्षणिक चिंता को शैक्षणिक दायित्व के डर के रूप में परिभाषित किया गया है और यह शैक्षणिक शिथिलता और शैक्षणिक दायित्वों के प्रति आशंका की भावनाओं से प्रकट होता है।

शैक्षणिक चिंता के तीन स्तर पाये जाते हैं— (1) उच्च शैक्षणिक चिंता (2) सामान्य शैक्षणिक चिंता (3) निम्न शैक्षणिक चिंता।

निम्न शैक्षणिक चिंता बालक को प्रोत्साहित करती है, कि वह शिक्षा में अच्छा प्रदर्शन कर सके। सामान्य शैक्षणिक चिंता अधिकांशत: विद्यार्थियों में पाई जाती है, क्योंकि प्रतिस्पर्धात्मक माहौल में रहने के लिए व अपने को अव्वल बनाये रखने के लिए सामान्य चिंता होना आवश्यक है। उच्च शैक्षणिक चिंता विद्यार्थियों पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। जो घटित ही नहीं हुआ, उसके लिए पूर्वाग्रह या नकारात्मक परिणामों के डर से पहले ही तनाव की स्थिति में रहना, कुंठित होना, निराशा से मर जाना, समायोजन न कर पाना, भय व घबराहट से सामान्य परिस्थिति का सामना करने में असमर्थता तथा मानसिक उद्वेलन की स्थिति उत्पन्न हो जाना आदि नकारात्मक प्रभाव विद्यार्थी के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।

लिंग (जेंडर)—

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार लिंग महिलाओं और पुरुषों (लड़कियों और लड़कों) की विशेषता को संदर्भित करता है। जो सामाजिक रूप से निर्मित होते हैं, जिसमें उनकी मानदंड व्यवहार व भूमिकाओं को भी शामिल किया गया है। लड़कों और लड़कियों में शारीरिक रूप से भिन्नता पाई जाती है तथा घर व विद्यालय के वातावरण में भी दोनों के साथ अलग—अलग प्रकार के व्यवहार किये जाते हैं। समाज में भी दोनों के मानदंड अलग होने के कारण एक—दूसरे से भिन्न माना जाता है।

स्थानीयता—

जिले के विकसित क्षेत्र को शहरी (जहाँ सभी सुविधायें— बिजली, पानी आदि की उचित व्यवस्था होती है) व अविकसित क्षेत्र जहाँ जहाँ उनकी क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग होता है (जहाँ सड़कें भी पक्की नहीं पाई जाती हैं) ग्रामीण क्षेत्र कहा जाता है। शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल व ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल की संरचना में कई अंतर पाये जाते हैं। उनमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों की आर्थिक सामाजिक स्थिति के साथ—साथ उनकी मानसिक स्थिति में भी अंतर पाये जाते हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य—

1- हाईस्कूल के छात्र व छात्राओं की शैक्षणिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन।
2- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पना—

1- हाईस्कूल के छात्र व छात्राओं की शैक्षणिक चिंता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन—

दास, हलदर मिश्रा (2014) 'ए स्टडी ऑन एकेडमिक एचीवमेंट ऑफ सेकेंडरी लेवल स्कूल स्टूडेंट्स' इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षणिक चिंता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन किया। उन्होंने आठवीं कक्षा के 237 विद्यार्थियों (जिनमें 128 लड़के व 109 लड़कियाँ शामिल थी) यादृच्छिक विधि से चयनित किया। आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि छात्रों की तुलना में छात्राओं में शैक्षणिक चिंता अधिक पाई गई तथा शैक्षणिक चिंता व शैक्षणिक उपलब्धि के बीच नकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

शर्मा, रचना (2017), ''रिलेशनशिप बिटवीन एकेडमिक एन्जायटी एंड मेंटल हेल्थ एमंग एडोलेसेंट' प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी ने उद्देश्यपूर्ण नमूना तकनीक के माध्यम से 13 से 16 वर्ष की आयु के 100 किशोर विद्यार्थियों को सम्मिलित किया। निष्कर्ष से पता चला कि छात्र और छात्राओं दोनों में ही शैक्षणिक चिंता पाई गई तथा शैक्षणिक चिंता व मानसिक स्वास्थ्य नकारात्मक रूप से सह—संबंधित पाये गये।

कपूर राधिका (2019)'जेंडर इनइक्वेलिटी इन एजूकेशन' प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी ने शिक्षण संस्थानों में लैंगिक असमानता का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में लड़के

और लड़कियों के बीच अधिक भेदभाव किया जाता है। शिक्षण संस्थान में छात्र—छात्राओं के बीच लैंगिक असमानता को भेदभाव का कारण न बना कर बराबर भागीदारी में सुधार हुआ है।

गंडारस, गुटियाज, ओहारा (2001) 'प्लानिंग फॉर द फ्यूचर इन रूरल एंड अर्बन हाईस्कूल्स' प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने ग्रामीण व शहरी हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर अध्ययन किया। निष्कर्ष में ज्ञात हुआ कि ग्रामीण छात्र अक्सर बीच में ही अपनी शिक्षा छोड़ देते हैं, ग्रामीण हाईस्कूल के विद्यार्थियों को अभिभावकों का सहयोग कम प्राप्त होता है तथा शहरी क्षेत्रों के हाईस्कूल के विद्यार्थियों और ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाये गये।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की शोध विधि—

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपनी समस्या पर अध्ययन करने के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध का न्यादर्श—

प्रस्तुत शोध कार्य में मेरठ जिले के 10 हाई स्कूल के 200 विद्यार्थियों को स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा चयनित किया गया है। जिसमें 100 छात्र एवं 100 छात्रायें सम्मिलित हैं।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त शोध उपकरण—

शोध कार्य हेतु शोधार्थी ने डॉक्टर ए. के. सिंह व डॉ. ए. सेन गुप्ता द्वारा निर्मित तथा संशोधित मानकीकृत उपकरण (2018) का प्रयोग विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता का स्तर ज्ञात करने के लिए किया है। इस मापनी में कुल 20 प्रश्न हैं, जिनका उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में विद्यार्थियों को देना है।

शोध परिसीमन—

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मेरठ जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को ही न्यादर्श के रूप में चुना गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियाँ—

शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन के अनुरूप प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया है।

आँकड़ों का विश्लेषण—

प्रदत्तों के संकलन के पश्चात् उनका विश्लेषण व विवेचन करना अति महत्वपूर्ण होता है। जिस से शोध कार्य संबंधी उपलब्धियों तथा निष्कर्षों का उचित निरूपण किया जा सके।

उद्देश्य—1 हाईस्कूल के छात्र व छात्राओं की शैक्षणिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका सं० 1

माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं की शैक्षणिक चिंता के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात

वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक त्रुटि	टी—मान	सार्थकता स्तर
छात्र	100	11.93	3.48	0.35	0.53	असार्थक
छात्राएँ	100	12.17	2.86	0.29		

टी—मूल्य 0.53 < तालिका मूल्य 1.96 (0.05 सार्थकता स्तर पर)

उपरोक्त तालिका संख्या—1 में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र—छात्राओं की शैक्षणिक चिंता की सांख्यिकीय गणना के आधार पर पाया गया कि छात्रों का मध्यमान 11.93 एवं प्रमाणिक विचलन 3.48 है और छात्राओं का मध्यमान 12.17 एवं प्रमाणिक विचलन 2.86 है। तालिका के आधार पर उपरोक्त आंकड़ों की गणना करने पर टी—मूल्य 0.53 प्राप्त हुई है जो कि तालिका में निर्धारित 0.05 सार्थकता स्तर (198 स्वतन्त्रता के लिए) तालिका मूल्य 1.96 से कम है। इस आधार पर परिणामस्वरूप छात्रों की शैक्षणिक चिंता व छात्राओं की शैक्षणिक चिंता में तुलनात्मक रूप से कोई अन्तर नहीं है। अत: पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना 'हाईस्कूल के छात्र व छात्राओं की शैक्षणिक चिंता के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती है।

उद्देश्य—2 शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों और ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिणिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका सं०—2

शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक त्रुटि	टी—मान	सार्थकता स्तर
शहरी क्षेत्र के हाईसकूल के विद्यार्थी	100	11.82	3.41	0.34	0.70	असार्थक
ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थी	100	11.99	2.84	0.28		

टी—मूल्य 0.70 < तालिका मूल्य 1.96 (0.05 सार्थकता स्तर पर)

टी—मूल्य 0.70 < तालिका मूल्य 1.96 (0.05 सार्थकता स्तर पर) उपर्युक्त तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों का मध्यमान 11.82 एवं प्रमाणिक विचलन 3.41 तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों का मध्यमान 11.99 एव प्रमाणिक विचलन 2.84 है तालिका के आधार पर उपरोक्त आँकड़ों की गणना करने पर ज.अंसनम 0.70 प्राप्त हुई है जो कि 198 स्वतन्त्रता के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर दिये गये मान 1.96 से कम है। अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता और ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता के स्तर में तुलनात्मक रूप से कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अत: हमारी शून्य परिकल्पना 'शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों और ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है' स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष—

उपरोक्त निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि शैक्षणिक चिन्ता से आज का कोई भी बालक अछूता नहीं है। वह शहरी क्षेत्र में हो या ग्रामीण क्षेत्र में हो, बालक हो या बालिका हो। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों की शैक्षणिक चिंता व छात्राओं की शैक्षणिक चिंता में तुलनात्मक रूप से कोई अन्तर नहीं है तथा शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता और ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता के स्तर में तुलनात्मक रूप से कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची —

- फ्रायड (1936) 'द प्रॉब्लम ऑफ एन्जायटी', न्यूयॉर्क।
- ईजनेक (2009) 'द इम्पैक्ट ऑफ एन्जायटी ऑन एकेडमिक एचीवमेंट ऑफ स्टूडेंट्स', https://www.sciencedaily.com/release/ 2009/06/ 09062 3090713-htm.
- हुड्डा, माधुरी (2017) 'एकेडमिक एन्जायटी अन ओवरव्यू', https://www. researchgate.net/publication/327281370.
- कॉर्नेल यूनिवर्सिटी 'अंडरस्टेंडिंग एकेडमिक एन्जायटी', www.Isc.cornel-ledu.
- दास, हलदर मिश्रा (2014) 'ए स्टडी ऑन एकेडमिक एंड एकेडमिक एचीवमेंट ऑफ सेकेंडरी लेवल स्कूल स्टूडेंट्स', ISRT, ISSN-2230-7850, Vol-4/ISSUE-6 https://www.researchgate.net/publication/263939820.
- शर्मा, रचना (2017) 'रिलेशन बिटवीन एकेडमिक एन्जायटी एंड मेंटल हेल्थ एमंग एडोलेसेंट' IJRHAL, Vol-5, ISSUE-11, pp. 113-120.
- कपूर राधिका (2019) 'जेंडर इनइक्वेलिटी इन एजुकेशन', www.reserachgate.net.
- गंडारस, गुटियाज, ओंहारा (2001) 'प्लानिंग फॉर द फ्यूचर इन रूरल एंड अर्बन हाईस्कूल', JESPAR-6(1): pp. 73-93. DOI:10-1207/515327671ESPR0601- pp. 2-5.
- शर्मा आर. ए., चतुर्वेदी शिक्षा (2014) 'शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- डॉ. सिंह, डॉ. गुप्ता (2018) 'एकेडमिक एन्जायटी स्केल फॉर चिल्ड्रन', AASC.SG.